

मूल स्वभाव (फ़तिरा)

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम के फायदे सच्ची खुशी और मन की शांति](#)

द्वारा: Dr. Bilal Philips

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

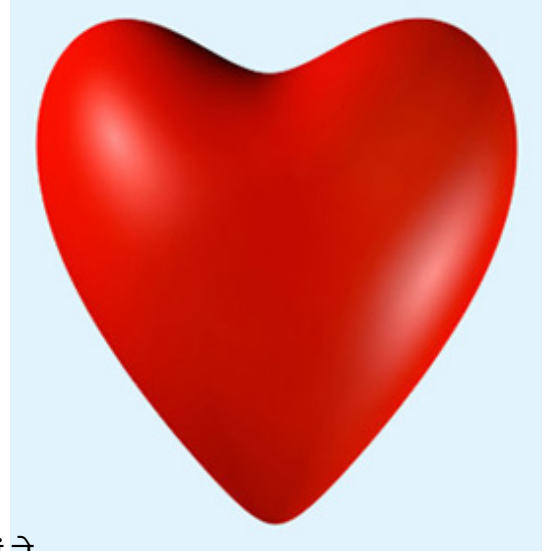
जब एक बच्चा पैदा होता है तो उसमें ईश्वर के प्रति स्वाभाविक विश्वास होता है। इस स्वाभाविक विश्वास को अरबी में "फ़तिरा" कहा जाता है।^[1] यदि बच्चे को अकेला छोड़ दिया जाए तो वह ईश्वर के एक होने में विश्वास करेगा, लेकिन सभी बच्चे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने आस पास के लोगों की वजह से प्रभावित होते हैं। पैगंबर (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) ने बताया कि ईश्वर ने कहा है,

"मैंने अपने सेवकों को सही धर्म में पैदा किया लेकिन शैतानों ने उन्हें भटका दिया।"^[2]

पैगंबर ने यह भी कहा,

"प्रत्येक बच्चा "फ़तिरा" के साथ पैदा होता है, लेकिन उसके माता-पिता उसे यहूदी या ईसाई बना देते हैं। यह ठीक उसी तरह है जैसे एक जानवर एक सामान्य जानवर को जन्म देता है। क्या आपने किसी जानवर को विकृत पैदा होते देखा है, वह मनुष्य ही है जो इसे विकृत बनाता है"^[3]

तो जसि तरह बच्चे का शरीर उन भौतिक नियमों के अधीन होता है जो ईश्वर ने प्रकृति में बना रखे हैं, उसकी आत्मा भी उसी तरह स्वाभाविक रूप से जानती है कि ईश्वर ही उसका नरिमाता है। लेकिन उसके माता-पिता उसे अपने तरीके से चलाने की कोशिश करते हैं और बच्चा अपने जीवन के शुरुआती चरणों में अपने माता-पिता का वरिध नहीं कर पाता। इस अवस्था में बच्चा जसि धर्म को मानता है वह उसके पालन-पोषण की वजह से होता है और ईश्वर उसे इसके लिए जम्मेदार नहीं मानता या दंडति



नहीं करता है। लेकिन जब बच्चा युवावस्था में समझदार हो जाये और उसके धर्म का झूठ उसे पता चल जाये तो उसे ज्ञान और तरक वाले धर्म का पालन करना चाहिए।^[4] यह वो समय होता है जब शैतान उसे वैसे ही रहने के लिए प्रोत्साहित करता है या और भटका देता है। बुराइयां उसे अच्छी लगने लगती है और अब सही रास्ता खोजने के लिए उसको अपनी फतिरा और अपनी इच्छाओं के बीच संघर्ष करना पड़ता है। यदविह अपना फतिरा चुनता है तो ईश्वर उसकी इच्छाओं को दूर करने में उसकी मदद करता है, भले ही इन्हें दूर करने में उसका अधिकांश जीवन क्यों न लग जाए, क्योंकि बहुत से लोग अपने बुढ़ापे में इस्लाम धर्म अपनाते हैं, हालांकि अधिकांश लोग इसे पहले अपना लेते हैं।

फतिरा के खिलाफ लड़ने वाली इन सभी शक्तिशाली ताकतों के कारण ईश्वर ने कुछ नेक लोगों को चुना और उन्हें जीवन में स्पष्ट रूप से सही रास्ता दिखाया। ये वो लोग हैं जिन्हें हम पैगंबर कहते हैं, उन्हें हमारे फतिरा के दुश्मनों को हराने में मदद करने के लिए भेजा गया था। आज दुनिया भर के समाजों में मौजूद सभी सत्य और अच्छी प्रथाएं उनकी शक्तिशाली शक्ति से आई हैं, और अगर उनकी शक्ति नहीं होती तो दुनिया में कोई शांति या सुरक्षा नहीं होती। उदाहरण के लिए, अधिकांश पश्चिमी देशों के कानून पैगंबर मूसा के "दस आदेशों" पर आधारित हैं, जैसे "आप चोरी नहीं करोगे" और "आप हत्या नहीं करोगे," आदि, भले ही वे "धर्मनिरपेक्ष" सरकार होने का दावा करते हों।

इसलिए यह मनुष्य का कर्तव्य है कि वो पैगंबरों के दिखाए हुए रास्ते पर चले क्योंकि यही एकमात्र तरीका है जो वास्तव में उसके स्वाभाव के अनुरूप है। उसे बहुत सावधान रहना चाहिए कि वह केवल कोई काम इसलिए न करे क्योंकि उसके माता-पिता और उनके माता-पिता ने ऐसा किया था, खासकर तब जब उसे पता चल जाये कि ये प्रथाएं गलत हैं। यदविह सत्य के रास्ते पर नहीं चलता है, तो वह रास्ते से भटक गए उन लोगों की तरह हो जायेगा जिनके बारे में ईश्वर क़ुरआन में कहता है:

"और जब उनसे कहा जाता है, 'ईश्वर ने जो कुछ बताया है उसका पालन करो।' तो कहते हैं, 'नहीं बल्कि हम तो उसका पालन करेंगे जिसका पालन हमारे बाप-दादा ने किया था' जबकि उनके बाप-दादा ने कुछ भी नहीं समझा था और न ही उन्हें सही मार्गदर्शन दिया गया था।" (क़ुरआन 2:170)

यदहमारे माता-पिता चाहते हैं कि हम पैगंबरों द्वारा दिखाए गए रास्ते के वरिद्ध चलें तो ईश्वर हमें उनकी आज्ञा मानने से मना करता है। ईश्वर क़ुरआन में कहता है,

"हम मनुष्य को सलाह देते हैं कि अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करें, लेकिन यदवि मेरा नाम लेकर आपसे वह करने को कहें जो आप जानते हैं कि वह गलत है, तो उनकी बात न मानें।"

(क़ुरआन 29:8)

पैदाइशी मुस्लमि

जनि लोगों को मुस्लमि परिवारों में जन्म लेने का सौभाग्य मलिा है, उन्हें इस बात की जानकारी होनी चाहिए कसिभी "मुसलमानों" के स्वर्ग में जाने की गारंटी नहीं है, क्योंकि पैगंबर ने चेतावनी दी थी कि मुस्लमि देश का एक बड़ा हसिा यहूदियों और ईसाइयों का इतनी बारीकी से पालन करेगा कयिदवि छपिकली की मांद (गुहा) में जाएंगे तो मुसलमान भी उनके पीछे-पीछे चला जायेगा।^[5] उन्होंने यह भी कहा कि क्रियामत के दनि से पहले कुछ लोग वास्तव में मूरतियों की पूजा करने लगेंगे।^[6] आज दुनयिा भर में कई मुसलमान हैं जो मरे हुए से प्रार्थना कर रहे हैं, कब्रों पर मकबरे और मस्जिदें बना रहे हैं और यहां तक कि उनके चारों ओर पूजा के संस्कार भी कर रहे हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो मुस्लमि होने का दावा करते हैं और अली को ईश्वर मानकर पूजते हैं।^[7] कुछ लोग कुरआन को शुभ (सौभाग्य आकर्षण) मानते हैं और उसे माला में लगा के गले में पहनते हैं, अपनी कारों में टांगते हैं या चाबी के छल्लो में लगाते हैं। इसलिए मुस्लमि समाज मे पैदा हुए वो लोग जो आंख बंद करके वही करते हैं जो उनके माता-पति ने कयिा या माना हैं, तो उन लोगों को सोचने की जरुरत है कि कयिा वे संयोग से मुसलमान हैं या पसंद से मुसलमान हैं, क्या इस्लाम वही है जो उनके माता-पति, समाज, देश या राष्ट्र ने कयिा था या कर रहे हैं, या कुरआन क्या सखिाता है और पैगंबर और उनके साथियों ने क्या कयिा।

फुटनोट:

[1] अल-अकीदह अत-तहावीयह, (8वां संस्करण.. 1984) पृष्ठ 245

[2] ????? ????????

[3] ????? ??-???????, ????? ????????

[4] अल-अकीदह अत-तहावीयह, (5वां संस्करण: 1972)। पृष्ठ 273

[5] ????? ??-???????, ????? ????????

[6] ????? ??-???????, ????? ????????

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/1983>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।